अ़ब्दे मुस्तफ़ा

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

मन्सूर हल्लाज

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

اللہ کے نام سے شروع جو نہایت مہربان، رحمت والا ہے۔

मन्सूर ह़ल्लाज

पेशकश	: अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
ज़ुबान	: हिंदी
मौज़ू	: सीरत, तह़क़ीक़
हिंदी तर्जुमा	: अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल ट्रांस्लेशन डिपार्टमेंट
प्रकाशक	: साबिया वर्चुअल पब्लिकेशन
कंपोज़िंग एंड डिज़ाइनिंग	: प्योर सुन्नी ग्राफिक्स
सना इशाअ़त	: अगस्त 2022 (मुहर्रम 1444 हिजरी)
सफ़ह़ात	: 14
क़ीमत	: ---

Sabiya Virtual Publication
Powered by Abde Mustafa Official

Contact : +919102520764 (WhatsApp)
Mail : abdemustafa78692@gmail.com

CONTENTS

हज़रते हुसैन बिन मंसूर हल्लाज तीसरी सदी के मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं जिनके बारे में मुख्तलफ़ किस्म की बातें मन्क़ूल हैं।
हमें उनके बारे में जो मालूमात मिली हैं, उसे इख्तिसार के साथ यहाँ नक़्ल करेंगे।

उलमा के तीन गिरोह

हज़रते हुसैन बिन मंसूर हल्लाज के बारे में उलमा के तीन गिरोह हैं।
एक वो हैं जो उन्हें काफ़िर कहते हैं, दूसरे मुतवक़्क़िफ़ीन जो उन के बारे में कुछ नहीं कहते, ना काफ़िर कहते हैं और ना वली मानते हैं।
तीसरे जो उन्हें अल्लाह का वली मानते हैं।
(देखिए फ़तावा शारहे बुखारी, 2/136)

अल्लामा शरीफ़ुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि सहीह यही है कि वो वली आरिफ़ बिल्लाह थे, ग़लबा -ए- सुकर में उनकी ज़बान से **"अनल हक़"** निकल गया जिस पर वो माज़ूर हैं।

हज़रते मुल्ला अली क़ारी ने शिफ़ा शरीफ़ की शरह में हज़रते ग़ौसे आज़म रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का ये इरशाद नक़्ल फ़रमाया :

عثر حلاج ولم يكن في عهده من يأخذ يده ولو كان في عهدي لاخذت يده

हल्लाज फिसल गया, उस के ज़माने में कोई ऐसा नहीं था जो उसकी दस्तगीरी करता, अगर वो मेरे ज़माने में होता तो ज़रूर उस की दस्तगीरी करता।

(फ़तावा, शारहे बुखारी, जिल्द 2, सफ़हा 156)

मन्सूर हल्लाज पर कुफ़्र का फ़तवा?

हज़रते हुसैन बिन मन्सूर जिस अहद में थे उस अहद में फिरक़ा -ए बातिनिया का बहुत ज़ोर था।
"हक़" अल्लाह के अस्मा -ए हुस्ना में से है, इसका ज़ाहिर माना है (लिहाज़ा) अब "अनल

हक़" कहना दावा -ए- उलूहिय्यत के मुरादिफ़ हुआ।

उलमा -ए- ज़ाहिर जो हज़रते हुसैन बिन मन्सूर की हक़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं थे उन्होंने यही समझा कि ये फिरक़ा -ए- बातिनिया का कोई दाई है इसलिए उनके क़त्ल करने का फ़तवा दिया।

(फ़तावा शारहे बुखारी, 2/138)

जुनैदे बग़दादी का फ़तवा

उस वक़्त हज़रते जुनैद बग़दादी रहीमहुल्लाहु त'आला भी थे, उन्होंने शुरू में हज़रते हुसैन बिन मन्सूर के क़त्ल के फ़तवे पर दस्तखत करने से इंकार कर दिया मगर जब ये अर्ज़ किया गया कि अगर मन्सूर को छोड़ दिया गया तो फिरक़ा -ए बातिनिया को तक़विय्यत होगी और दीन में रुखना पैदा हो जाएगा तो उन्होंने जामा -ए फक़र उतार कर उलमा का लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया और इस फ़तवे पर दस्तखत फ़रमाई।

(फतावा शारहे बुखारी, 2/138)

कुफ़्र ज़ाहिर है

जहाँ तक ज़ाहिर का ताल्लुक़ है, हज़रते हुसैन बिन मन्सूर का कुफ़्र साबित है, इसी वजह से बाद के भी बहुत से उलमा ने इनको काफ़िर ही माना यहाँ तक कि खातिमुल हुफ्फाज़, अल्लामा जलालुद्दीन सुयुती का भी रुझान यही है मगर चूँकि हज़रते हुसैन बिन मन्सूर उस वक़्त मजज़ूब थे, अक़्ले तक्लीफ़ी बाक़ी ना थी, इसलिए बहुत से उलमा उनके बारे में मुतवक़्क़िफ़ रहे (यानी खामोश रहे) और बहुत से उलमा ने इनको आरिफ बिल्लाह माना (ग़ौसे आज़म का एक इरशाद हम नक़्ल कर चुके जो की नसीमुर रियाज़ फी शरह शिफा अल क़ाज़ी इयाज़ 4/538 में मौजूद है)

(फ़तावा शारहे बुखारी, 2/138)

गौसे पाक के इरशाद में फ़ाइदा

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के मज़कूरा फ़रमान में लफ़्ज़े "असरा" बता रहा है कि उनसे लग़्ज़िश हुई, ग़ौसे आज़म का ये इरशाद उलमा -ए- ज़ाहिर व बातिन दोनों के लिये हुज्जत है और

आगे जो कुछ फ़रमाया वो इसकी दलील है कि बातिन उनका सादिक़ था इसकी तावील यही है कि वो मजज़ूब थे, हालते जज़्ब में ग़ैर इख़्तियारी तौर पर उनसे ये जुमला सादिर हुआ, हुक्मे शरीअत ज़ाहिर पर है इसलिये ज़ाहिर के मुताबिक़ सज़ा दी गई लेकिन मजज़ूब की अक़्ले तकलीफ़ी बाक़ी नहीं रहती इसलिये वो हक़ीक़त में माज़ूर होते हैं और उनका हाल सादिक़ होता है, इसलिये उनके साथ एतिक़ाद रखा जाता है।

हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार खान नईमी के क़ौल के मुताबिक़ मजज़ूब[1] मिस्ले शजरे तूबा के बे इख़्तेयार होते हैं जैसे दरख़्त ना हरकत करता है ना सुकून, ना इस में कोई आड़ होती है लेकिन शजरे तूबा से "इन्नी अनल्लाह" सुनाई दिया इसी तरह मजज़ूब बे इख़्तेयार महज़ होता है, उसका क़ौलो फैल (उसका) नहीं होता है।
(फ़तावा शारहे बुखारी, 2 /138)

काफ़िर मानें या मुसलमान?

अल्लामा मुफ़्ती अजमल क़ादरी रहीमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि हज़रते मंसूर हल्लाज रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बिला शक मुसलमान थे और आलिमे रब्बानी, सूफ़ी व हक़्क़ा़नी थे।

हज़रते अल्लामा इब्ने हजर के फ़तावा हदीसिया में है :

و ممن اعتمد هذا المسلك الشبهات السهروردی المجمع علی امامته فی العلوم الظاهرة والباطنة فی
عوارفه حیث قال وما حکی عن ابی یزید رضی اللہ عنہ من قوله سبحانی... الخ

(फ़तावा अजमलिया, 1/296)

अल्लामा इब्ने हजर और मंसूर हल्लाज

हज़रते मंसूर हल्लाज के क़ौल "अनल हक़" (मैं हक़ हूँ) के बारे में अल्लामा इमाम इब्ने हजर मक्की (मुतवफ़्फ़ा 974 हिजरी) लिखते हैं :

हज़रते आरिफ़ीन पर कुछ ऐसे अवक़ात आते हैं जिन में इन पर इल्म व बसीरत की

[1] हाशिया : हालते जज़्ब, हालते सुकर और शत्हियाते औलिया को तफ़्सील से पढ़ने के लिये हमारा रिसाला "ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह?" मुलाहिज़ा फरमाएँ जहाँ हमने इस मसअले पर उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ात को नक़्ल किया है।

आँख के साथ शुहूदे हक़ का ग़लबा हो जाता है, जब उनके हक़ में ये शुहूद कामिल व ताम हो जाता है तो वो हर चीज़ से हत्ता कि अपनी ज़वात व नुफूस से भी बेख़बर हो जाते हैं सिवाए हक़ त'आला के इन्हें किसी का शऊर बाक़ी नहीं रहता पस ऐसी हालत में वो इस क़ुर्बे अक़्दस की ज़ुबान पर गुफ़्तगू करते हैं, जिस क़ुर्बे अक़्दस से इनको नवाज़ा गया होता है और जिस की तरफ़ इस हदीसे क़ुद्सी में इशारा किया गया है :

जब मैं अपने बंदे से महब्बत करता हूँ तो मैं उसकी समा'अ उसकी आँख, उसका हाथ और उसका पाऊँ बन जाता हूँ।

(सहीह इब्ने हिब्बान, 2/58, 347)

अल्लाह त'आला ने अपनी ज़ाते अक़्दस के लिये जो चीज़ साबित फ़रमाई है उस हाल में सूफ़िया -ए- किराम उसको अपनी ज़वात के लिये बतरीक़ इब्हाम साबित करते हैं, उसको वो ना बतरीक़ हक़ीक़त साबित करते हैं और ना तो उस इत्तिहाद के माना में साबित करते हैं जो ऐन कुफ़्रो इल्हाद है जिस से अल्लाह त'आला ने आरिफ़ीन को महफ़ूज़ रखा हुआ है।

बल्कि इस इत्तिहादे शुहूद के माना में साबित करते हैं जो शुहूद सिर्फ़ अल्लाह त'आला की ज़ाते अक़्दस की तरफ़ हुक्म राजे करता है।

"अनल हक़" नहीं कहा - आला हज़रत

आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी रहीमहुल्लाहु त'आला लिखते हैं कि हज़रते हुसैन बिन मंसूर हल्लाज कुद्दिसा सिर्रुहू जिन को अवाम मंसूर कहते हैं, मंसूर इनके वालिद का नाम था और इनका इस्मे गिरामी हुसैन, आप अकाबिरे अहले हाल से थे, इनकी एक बहन इनसे बादर्जहा मर्तबा -ए- विलायत व मारिफ़त में ज़ाइद थी, वो आख़िर शब को जंगल तशरीफ़ ले जाती और यादे इलाही में मसरूफ़ होती एक दिन इनकी आँख खुली, बहन को ना पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता ना चला, उनको वस्वसा गुज़रा, दूसरी शब क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे, वो अपने वक़्त पर उठ कर चली, ये आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे (देखते हैं कि) आसमान से सोने की ज़ंजीर में याक़ूत का जाम उतरा और उनके दहने मुबारक (यानी मुँह) के बराबर आ लगा, उन्होंने पीना शुरू किया, इनसे सब्र ना हो सका कि ये जन्नत की ने'मत ना मिले, बे इख़्तियार कह उठे कि बहन! तुम्हें अल्लाह की क़सम कि थोड़ा मेरे लिये छोड़ दो, उन्होंने

एक जुर'आ (यानी एक घूँट) छोड़ दिया, उन्होंने पिया, उसके पीते ही हर जड़ी बूटी, हर दरो दीवार से उनको ये आवाज़ आने लगी कि कौन इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए, इन्होंने कहना शुरू किया :

انالاحق

यानी बेशक मैं इस का सबसे ज़्यादा हक़दार हूँ।

लोगों के सुनने में आया "अनल हक़" (यानी मैं हक़ हूँ), वो लोग दावा -ए- ख़ुदाई समझे और ये कुफ़्र है और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे, मुर्तद है और मुर्तद की सज़ा क़त्ल है।

(फ़तावा रज़विय्या, 26/400)

एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि हज़रते हुसैन मन्सूर "अनल हक़" नहीं कहते थे बल्कि :

انالاحق

मैं अहक़ (ज्यादा मुस्तहिक़ हूँ)

इब्तिला -ए इलाही के लिये सामईन के फ़हम की ग़लती थी, लोगों ने कुछ सुना और जो मंज़ूर था वाकेए हुआ।

(फ़तावा रज़विय्या, 29/628)

हल्लाज क्यों कहते हैं?

अल्लामा मुफ़्ती ग़ुलाम रसूल लिखते हैं कि हज़रते शाह मंसूर का नाम हुसैन बिन मंसूर है, आप की कुन्यत अबुल मुगीस है।

आप सोज़ो सुकर और शौक़ व मस्ती में अपनी मिसाल आप हैं, आप की बेशुमार तसानीफ़ हैं जो कि फसाहत और बलाग़त के इलावा इसरार और रुमूज़ पर मुश्तमिल हैं, आप बहुत बड़े आबिद थे, रात और दिन में चार सौ रकअत नफ़्ल पढ़ा करते थे और मशकूक खाना नहीं खाते थे और हर नमाज़ के लिये ग़ुस्ल फ़रमाया करते।

आपको हल्लाज इस वजह से कहते हैं कि एक मर्तबा एक जगह से गुज़रे जहाँ रोटी और कपास पड़ी हुई थी, उसकी तरफ़ इशारा किया तो रोटी और बांवले अलाहिदा अलाहिदा हो गए, अरब कहते हैं :

حلج القطن

उस ने रोटी को धुन कर बांवले निकाले

(منجد، ص275)

बदीं मुनासिबत आपको हल्लाज कहा गया है, आप के वाक़ियात में है कि जब आप पर हालते सुकर और जज़्ब का ग़लबा हुआ और मक़ामे फ़ना फिल्लाह तक रसाई हुई तो आपकी ज़ुबान से कलिमा "अनल हक़" सादिर हुआ, हकीमे बग़दाद के पास शिकायत की गई तो उस वक़्त के उलमा और फुक़हा ने क़त्ल का फ़तवा दिया।

अली बिन ईसा वज़ीर ने आप को जेल में भेज दिया, आप जब जेल में पहुँचे तो एक रात आपने अनल हक़ का नारा मारा तो जेल की दीवारें फट गईं और एक मर्तबा नारा मारा तो वहाँ मौजूद क़ैदियों के पैरों में जो ज़ंजीरें थीं वो टूट गईं और आपने क़ैदियों को हुक्म दिया कि क़ैद खाने से निकल जाओ, क़ैदियों ने अर्ज़ की कि आप भी तशरीफ़ ले चलें, फ़रमाया : मुझे नहीं जाना तुम चले जाओ।

आप की वफ़ात 309 हिजरी 24 ज़िलक़ादा को हुई।

(तारीखे औलिया, 272) (फ़तावा जमातिया, 381)

शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे दहेल्वी और मंसूर हल्लाज

शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे दहेल्वी फ़रमाते हैं कि जहाँ तक इब्ने मंसूर का ताल्लुक़ है तो उनके बारे में अबू सईद खर्राज़ ने ये राय दी :

كان اوحد زمانه يكن فى عهده من الشرق الى الغرب مثله

इब्ने मंसूर मैदाने वहदत में यगाना रोज़गार थे और उनके ज़माने में मशरिक़ से मग़रिब तक उन के पाये का कोई आदमी ना था, इसी वजह से उन पर तौहीद का ऐसा ग़लबा हुआ कि वो पीछे ना हटे मगर मुनासिब बात तो ये है कि इब्ने मंसूर ने खुद तौहीदे हक़ीक़ी के राज़ को नहीं पाया था क्योंकि वो अपने क़ौल अनल हक़ पर हमेशा क़ाइम रहे जबकि तजल्ली बरक़ी आने वाहिद की तरह है।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि अगर अनल हक़ कहने वाला इम्कान के पर्दों में पोशीदा है तो वो झूटा है और दायरा -ए- फिरौनियत में दाख़िल हो जाता है और अगर उसकी जिहते

इम्कान मगलूब हो गयी है तो वो माज़ूर है।
(देखिए अन्फ़ासुल आरिफ़ीन, पेज 230)

आपके बारे में मज़ीद कुछ

अल्लामा मुफ़्ती फ़ैज़ानुल मुस्तफ़ा क़ादरी लिखते हैं[2] कि आपका नाम हुसैन बिन मंसूर है, अबू मुगीस कुन्यत है और हल्लाज (रूई धुनने वाला) से मशहूर हुए। हालाँकि ये उनका पेशा ना था, या तो वालिद का पेशा था या इसकी वजह ये थी कि उन्होंने एक बार एक धुनिया से कुछ काम कहा जिसने पेशा वराना मसरूफिय्यत का उज़्र किया तो आपने कहा तुम मेरा काम कर दो, मैं तुम्हारा ये काम कर देता हूँ, वो जब काम कर के लौटा तो आप दुकान की सारी रुई धुन चुके थे, इस लिये हल्लाज मशहूर हुए, कुछ लोग कहते हैं कि आप लोगों के दिलों के हाल मालूम कर लेते थे जिसके सबब हल्लाजुल असरार मशहूर हुए, फ़ारस के रहने वाले थे, वासित इराक़ में नशो नुमा पाई लोग इनके बारे में मुख्तलफ़ राय रखते हैं, कुछ तो इनकी ताज़ीम करते हैं कुछ इनकी तकफ़ीर करते हैं।

इब्ने खल्कान ने लिखा है कि इमाम ग़ज़ाली ने मिश्कातुल अनवार में इनके मुताल्लिक़ एक मुस्तक़िल बाब सिपुर्दे क़िरतास किया है जिस में इनके मुश्ताबे अक़्वाल मस्लन "अनल हक़" और "मा फिल जुब्बति इल्लल्लाह" जैसे अक़्वाल की तावील की है।

इब्ने असीर ने अपनी तारीख़ में लिखा है कि हज़रते हल्लाज कि इब्तिदा में ज़ुहदो तसव्वुफ़ से मशहूर थे, करामात दिखाते थे, सर्दी के फल गर्मी में और गर्मी के फल सर्दी में लाते, अपना हाथ हवा में लहरा कर ऐसे दराहिम ला देते जिन पर "क़ुल हुवल्लाहु अहद" लिखा होता और लोगों के दिलों के हाल बात देते जिनकी बिना पर लोग इनके क़ाइल हो गए, कुछ (म'आज़ अल्लाह) हूलूल के क़ौल करने लगे, कुछ विलायत का और इन उमूर

---

[2] हाशिया : मुफ़्ती फ़ैज़ानुल मुस्तफ़ा क़ादरी की तहरीर से हमने ये इक़्तिबास नक़्ल किया है, मुकम्मल तहरीर माहनामा पैग़ामे शरीअत, फरवरी 2018 में पढ़ी जा सकती है जिसका उन्वान है "हज़रते हुसैन बिन मंसूर हल्लाज और इमाम अहमद रज़ा"

ये मज़्मून एक कड़ी है, इस सिलसिले की "इमाम अहमद रज़ा और अकाबिरे उम्मत का दिफ़ा" इस उन्वान के तहत और भी तहरीरें लिखी गई हैं जिन में अकाबिरीने उम्मत के दिफ़ा में आला हज़रत के बयान को बड़े ही खूबसूरत अंदाज़ में पेश किया गया है।

को इनकी करामात मानते जब कि कुछ इनको जादूगर मानने लगे।

हज़रते दाता अली हजवेरी और मंसूर हल्लाज

हज़रते सय्यिद अली हजवेरी अलैहिर्रहमा ने भी कशफ़ुल महजूब में इनका तफ़सीली ज़िक्र किया है।

आप फ़रमाते हैं कि हज़रते हल्लाज इब्तिदा में सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी के मुरीद हुए फिर बग़ैर इजाज़त लिये उनके पास से चले गए और अम्र बिन उस्मान की सोहबत इख़्तियार कर ली फिर उनके पास से भी बग़ैर इजाज़त के चले गए और हज़रते जुनैद बग़दादी रहीमहुल्लाहु त'आला की खिदमत में हाज़िर हुए मगर उन्होंने क़बूल ना किया, इस बिना पर मशाइख़ इन को महजूर गरदांते हैं :

हज़रते शिब्ली ने फ़रमाया :

انا و الحلاج فی شیء واحد فخلصنی
جنونی واهلکه عقله

मैं और हल्लाज दोनों एक ही राह के राही हैं, मुझे मेरी वारफ़्तगी ने नजात दे दी और उन को उनकी अक़्ल ने खराब कर दिया

इसी तरह और अकाबिर के अक़्वाल उनकी हिमायत में ज़िक्र किया है,

अहले सुन्नत में कुछ लोग उन के कलिमात का रद्द करते हैं जो इम्तियाज़ व इत्तिहाद की ताबीर में है, ये अल्फ़ाज़ अगर्चे ताबीर व बयान में बुरे लेकिन मफ़हूम व माना में इतने बुरे नहीं हैं इसलिए कि मग़लूबुल हाल में ताबीर की क़ुदरत नहीं होती।

हासिल ये है कि इनके कलाम को मुक़्तदा ना बनाया जाए, इसलिये कि वो अपने हाल में मग़लूब थे, मुत्मक्किन ना थे।

अल्हम्दुलिल्लाह हज़रते हुसैन बिन मंसूर हल्लाज मुझे दिल से मरगूब व महबूब हैं। लेकिन उनका तरीक़ा किसी असल पर क़ाइम नहीं और ना किसी हाल पर उनकी इस्तिक़ामत है, मुझे इब्तिदा -ए- ज़ूहूर के वक़्त उनसे बहुत तक़विय्यत मिली है, मैंने उनके कलाम की शरह लिखी है और अपनी किताब मिन्हाजुल आबिदीन में उनकी इब्तिदा व इन्तिहा का ज़िक्र किया है।

(मुल्तक़तन, कशफ़ुल महजूब, 219-222 बा हवाला माहनामा पैग़ामे शरीअत)

निकात

अल्लामा मुफ़्ती फ़ैज़ानुल मुस्तफ़ा क़ादरी अपने मज़्मून के आखिर में निकात बयान करते हैं :

(1) आम तज़किरा निगारो ने यही लिखा है कि हज़रते हल्लाज "अनल हक़" कहते थे, इसकी तावील आला हज़रत ने ये फ़रमाई कि "अनल हक़" नहीं बल्कि "अनल अहक़" कहते थे, ये तावील मुम्किन है कि अकाबिर से माखूज़ हो लेकिन हमें ये नुक्ता आला हज़रत के यहाँ मिला, ज़ाहिर है बहन का जो वाक़िया आला हज़रत ने ज़िक्र किया इस पर "अनल हक़" की बजाए "अनल अहक़" का ही मफ़हूम बनता है।

इसका हासिल ये है कि अगर वो "अनल हक़" कहते ही ना रहे तो सिरे से उन पर कोई इल्ज़ाम ही नहीं।

(2) हो सकता है हज़रते हल्लाज के मक़ामात का जो क़ाइल हो वो उन फुक़हा की उस जमाअत की मज़म्मत शुरू कर दे जिसने उनके क़त्ल का फ़तवा दिया मगर इस मामले में आला हज़रत के कलिमात इस क़द्र एतिदाल पर हैं कि क़ारी को उस जमाअत के खिलाफ़ ज़ुबान खोलने का मौक़ा ही नहीं देते कि हज़रते हल्लाज के जो बातिनी अहवाल थे वैसे ही कलिमात उनकी ज़ुबान से निकले और जमाअते फुक़हा ने जैसा सुना वैसा फैसला दिया चुनाँचे आला हज़रत ने बड़ा बर महल शेर इरशाद फ़रमाया जिसका मफ़हूम ये है कि शरई फ़तवे की बुन्याद पर कभी पानी पीना भी जुर्म हो जाता है और कभी खून बहाना भी जाइज़।

(3) बल्कि आला हज़रत की इबारत से तो ये वाज़ेह होता है कि उस जमाअते फुक़हा के ज़रिए रब त'आला ने हज़रते हल्लाज के मतलूब व मुद्द'आ में उनकी मदद की क्योंकि आवाज़ तो आती थी कि कौन है जो हमारी राह में क़त्ल हो? इस पर आपने "अनल अहक़" कह कर राहे खुदा में अपनी जान की क़ुरबानी पेश कर दी....(मज़ीद आगे लिखते हैं कि) फुक़हा ने तो इनके क़त्ल का फ़तवा दिया था लेकिन हुक्काम ने इन्हें हज़ार कोड़े लगवाए फिर हाथ पाऊँ काट दिए फिर सर क़लम किया गया फिर कई दिनों तक इनका सर शहराहे आम पर रख कर लोगों को दिखाया गया और इनके जिस्म को आग में जला कर राख कर दिया गया और राख को दरया -ए- दजला में बहा दिया गया।

ये सब कुछ अब्बासी ख़लीफ़ा मुक़्तदिर बी अमरिल्लाह और उसके वज़ीर के इशारे

पर हुआ, देखने वालों ने बताया कि जब उनके आज़ा काटे जाते तो कोई आह व कराह ना करते बल्कि अहद अहद का आवाज़ा बुलंद करते थे।

इससे पहले क़ैदख़ाने में तेरह बेड़िया पैरों में डाली गईं थीं फिर शबाना रोज़ हज़ार रकअतें नफ़्ल अदा करते थे, ये सब राहे ख़ुदा में क़ुरबानी की अजीबो ग़रीब मिसाल है।

(4) आला हज़रत इनका ज़िक्र इस तरह करते हैं जैसे ख़ुद भी इनके फ़ैज़ याफ़्ता या उनके फ़ुयूज़ो बरकात के मुतमन्नी हैं, जैसा कि उनके ज़िक्र में :

سیدی، قدسنا اللہ باسرارھم

जैसे कलिमात बहुत वाज़ेह तौर पर महसूस किए जा सकते हैं।

(मुलख्खसन, माहनामा पैग़ामे शरीअत, फरवरी 2018, तहरीर हज़रते हुसैन बिन मंसूर हल्लाज और इमाम अहमद रज़ा)

देवबंदी आलिम, रशीद अहमद गंगोही और मंसूर हल्लाज

देवबंदी आलिम, रशीद अहमद गंगोही से जब हज़रते मंसूर हल्लाज के बारे में सवाल किया गया तो जवाब दिया गया कि मंसूर माज़ूर थे, बेहोश हो गए थे, उन पर फ़तवा कुफ़्र का देना बेजा है, उनके बाब में सुकूत चाहिए, उस वक़्त दफ़ा -ए- फ़ितना के वास्ते क़त्ल करना ज़रूरी था।

एक और सवाल के जवाब में तहरीर है कि बंदे (मेरे) नज़दीक वो वली थे और मंज़िले विलायत से बंदा नवाक़िफ़ है और बुज़ुर्गों के दरजात को जानना काम मेरा और आपका नहीं और कलाम अपने मर्तबे से करना लाज़िम है, ना आला अपने हाल से।

(फ़तावा रशीदिया, 248)

अहले हदीस, हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई की तनक़ीद

एक अहले हदीस, हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई ने हज़रते मंसूर हल्लाज पर बहुत सख़्त जिरह की है और एक तरफ़ा मौक़िफ़ बयान कर के बाक़ी सब को बातिल क़रार दिया है जैसा कि इस मक्तबा -ए- फ़िक्र के बारे में मशहूर है, ये अपने मतलब की बातों को ले कर बाक़ी सब को ज़ईफ़ और मौज़ू कह कर निकल जाते हैं, यक़ीनन ये एतिदाल पसंदी के ख़िलाफ़ है।

ज़ुबैर अली ज़ई लिखता है कि हुसैन बिन मंसूर हल्लाज जिसे जाहिल लोग मंसूर अल हल्लाज के नाम से याद करते हैं,,,,, (इस एक इबारत में ही उन सब को जाहिल क़रार दे दिया जिन्होंने मंसूर अल हल्लाज के नाम से उन्हें याद किया) आगे जिरह करते हुए और भी बहुत सी बातें लिखी हैं।
(फ़तावा इल्मिया, ज़ुबैर अली ज़ई, 1/161)

आखिरी बातें

हज़रते मंसूर हल्लाज के बारे में अगर्चे इख़्तिलाफ़ मौजूद है, बाज़ ने उन पर जिरह की है और उनके पास भी दलाइल मौजूद हैं लेकिन कई अकाबिर मुहक़्क़िक़ीन उनके ना सिर्फ ईमान बल्कि उनके मक़ामात के क़ाइल हैं और उनके अक़्वाल ही हत्तल इम्कान तावील करते हैं और यही मौक़िफ़ यहाँ सबसे ज़्यादा सहीह मालूम होता है जो एतिदाल के क़रीब है। हमने अल्लाह की तौफ़ीक़ से इन चंद सफ़हात में कुछ मालूमात को जमा करने की कोशिश की है जिससे उम्मते मुस्लिमा अपने इल्म में इज़ाफ़ा कर सके, अल्लाह त'आला क़बूल फ़रमा ले तो काफ़ी है, आप दुआ करें कि अल्लाह त'आला हमारी इस छोटी सी काविश को अपनी बारगाह में दर्जा -ए- मक़बूलिय्यत अता फ़रमा दे और इसे हमारे लिये ज़रिया -ए- बख़्शिश बना दे।

एक नसीहत पे इख़्तिताम

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि त'आला अलैह लिखते हैं कि जब तुम ग़ौर करोगे तो जान लोगे कि तुम्हारी सब से बड़ी दुश्मन ख्वाहिश है जो की नफ्स की सिफत है, यही वजह है कि हज़रते मन्सूर हल्लाज को फाँसी देते वक़्त जब तसव्वुफ़ के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया :

ये तुम्हारा नफ्स है, अगर तुम इसे मशगूल ना रखोगे तो ये तुम्हें मशगूल कर देगा।
(इहयाउल उलूम, 4/286)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हमारी किताबें हिंदी में

(1) बहारे तहरीर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इल्मी तहक़ीक़ी और इस्लाही तहरीरों पर मुश्तमिल एक गुलदस्ता जिसके अब तक 14 हिस्से रिलीज़ हो चुके हैं, हर हिस्से में 25 तहरीरें हैं जो मुख्तलफ़ मौज़ूआत (टॉपिक्स) पर हैं।

(2) अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई हवालों से साबित किया गया है कि अल्लाह त'आला को ऊपर वाला या अल्लाह मियाँ कहना जाइज़ नहीं है।

(3) अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में हज़रते बिलाल के अज़ान ना देने पर सूरज ना निकलने का ज़िक्र है।

(4) इश्क़े मजाज़ी (मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई अहबाब के मज़ामीन शामिल किये गए हैं जो इश्के मजाज़ी के ताल्लुक़ से हैं, इश्के मजाज़ी के मुख़्तलफ़ पहलुओं पर ये एक हसीन संगम है।

(5) गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो! - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस मुख़्तसर से रिसाले में गाने बजाने की मज़म्मत पर कलाम किया गया है और गानों के कुफ्रिया अशआर बयान किये गए हैं जिसे पढ़ कर कई लोगों ने गाने बजाने से तौबा की है।

(6) शबे मेराज गौसे पाक - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक मशहूर वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है जिस में हज़रते ग़ौसे आज़म का शबे मेराज हमारे नबी अलैहिस्सलाम से मिलने का ज़िक्र है।

(7) शबे मेराज नालैन अर्श पर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में मेराज की शब हुज़ूर नबी -ए- करीम अलैहिस्सलाम का नालैन पहन कर अर्श पर जाने का ज़िक्र है।

(8) हज़रते उवैस क़रनी का एक वाक़िया - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में हज़रते ओवैस क़रनी के अपने दंदान शहीद कर देने वाले वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है और साथ ये भी कि अल्लाह के आख़िरी रसूल अलैहिस्सलाम के दंदान शहीद हुए थे या नहीं और हुए तो उसकी कैफ़ियत क्या थी और कई तहक़ीक़ी निकात शामिले बयान हैं।

(9) डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला मज्मुआ है उन फ़तावा का जो हज़रते अल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा ने डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी के लिये लिखे हैं, ये फ़तावा डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी की गुमराही को बयान करते हैं।

(10) ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई दलाइल से साबित किया गया है कि सहाबा के अलावा भी तरद्दी (यानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु) का इस्तिमाल किया जा सकता है।

(11) चंद वाक़ियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

वाक़ियाते कर्बला के हवाले से अहले सुन्नत में बेशुमार वाक़ियात ऐसे आ गए हैं, जो शिओं की पैदावार हैं, इस रिसाले में हमने चंद वाक़ियात की तहक़ीक़ पेश की है जो कि अपनी नोइयत का मुन्फ़रिद काम है, इस तहक़ीक़ी रिसाले में कई इल्मी निकात मरक़ूम हैं।

(12) बिन्ते हव्वा (एक संजीदा तहरीर) कनीज़े अख़्तर

औरत की ज़िंदगी में पैदाइश से ले कर निकाह और फिर बादहू के मामलात की इस्लाह के लिये इस रिसाले को एक अलग अंदाज़ में लिखा गया है।

(13) सेक्स नॉलेज (इस्लाम में सोहबत के आदाब) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में जिंसी ताल्लुक़ात और इस हवाले से जदीद मसाइल पर ये रिसाला बड़े ही आम फ़हम अंदाज़ में लिखा गया है और आसान होने के साथ-साथ ये रिसाला दलाइल से मुज़य्यन भी है।

(14) हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाक़िए पर तहक़ीक़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ मशहूर वाक़ियात की तहक़ीक़ पर ये रिसाला लिखा गया है, कई हवालों से अस्ल रिवायत और उनकी कैफ़ियत को अम्बिया की अज़मत को मद्दे नज़र रखते हुए बयान किया गया है।

(15) औरत का जनाज़ा - जनाबे ग़ज़ल साहिबा

औरत के जनाज़े को कौन कौन देख सकता है? क्या शौहर काँधा नहीं दे सकता? और ऐसे कई सवालात के जवाब आपको इस रिसाले में मिलेंगे।

(16) एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

एक आशिक़ की बड़ी दिलचस्प कहानी है जिस में मज़ाह है, तफ़रीह है, सबक़ है और इबरत है। इस वाक़िए को अल्लामा इब्ने जौज़ी की किताब "ज़म्मुल हवा" से लिया गया है।

(17) आईये नमाज़ सीखें (पार्ट 1) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस किताब में नमाज़ पढ़ने और इससे मुताल्लिक़ ज़्यादा से ज़्यादा मसाइल को जमा करने की कोशिश की गई है, इस्तिलाहात को आसान अंदाज़ में बयान किया गया है, इस के अगले हिस्सों पर भी काम जारी है।

(18) क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में इस बात की तफ़्सील बयान की गई है कि क़ियामत के दिन लोगों को माँ के नाम के साथ पुकारा जाएगा या बाप के नाम से।

(19) शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही

शिर्क के मौज़ू पे एक बेहतरीन किताब है जिस में शिर्क का असल मफ़हूम बयान किया गया है।

(20) इस्लामी तअ़लीम (हिस़्सा अव्वल) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अ़मजदी रहमतुल्लाह अलैह

ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(21) मुहर्रम में निकाह - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में बयान किया गया है कि माहे मुहर्रम में भी निकाह जाइज़ है और इसे नाजाइज़ कहना बिल्कुल गलत है, मुहर्रम में ग़म मनाना ये कोई इस्लामी रस्म नहीं और चाहे घर बनाना हो या मछली, अंडा और गोश्त वग़ैरह खाना सब मुहर्रम में जाइज़ है।

(22) रिवायतों की तहकी़क़ (पहला हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला अहले सुन्नत में मशहूर रिवायतों की तहक़ीक़ पर मुश्तमिल है, इस में रिवायतों की तहक़ीक़ बयान की गई है, सहीह रिवायतों की सिह्हत पर और बातिल रिवायतों के मौज़ू व बेअस्ल होने पर दलाइल पेश किये गये हैं, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(23) रिवायतों की तहकी़क़ (दूसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का दूसरा हिस्सा है, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(24) ब्रेक अप के बाद क्या करें? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला उन नौजवानों के लिये लिखा गया है जो इश्के मजाज़ी में धोखा खा कर अपनी ज़िंदगी के सफ़र को जारी रखने के लिये राह तलाश कर रहे हैं।

(25) एक निकाह ऐसा भी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये एक सच्ची कहानी है, एक निकाह की कहानी, इस में जहाँ इस्लामी तरीके से निकाह को बयान किया है वहीं इस पर अमल की कोशिश भी की गई है।

है तो ये एक कहानी पर इस में आप तहक़ीक़ी निकात भी मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे।

(26) काफ़िर से सूद - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में आप पढ़ेंगे कि एक काफ़िर और मुसलमान के दरमियान सूद की क्या सूरतें हैं? और साथ ही लोन, बैंक और पोस्ट इंटरेस्ट पर उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ भी शामिले रिसाला है।

(27) मैं खान तू अंसारी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में क़ौम, ज़ात और बिरादरी वग़ैरह की अस्ल पर ये एक तहक़ीक़ी किताब है, इस में मसवात को क़ाइम करने की तरग़ीब दिलाई गई है, कुफ़ू के मसअले पर तहक़ीक़ी मवाद भी शामिले किताब है।

(28) रिवायतों की तहकी़क़ (तीसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का तीसरा हिस्सा है, इस के 2 हिस्सों का ज़िक्र हम कर आये हैं, इसके चौथे हिस्से पर काम जारी है।

(29) जुर्माना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला माली जुर्माने के मुताल्लिक़ लिखा गया है, माली जुर्माना फ़िक़्हे हनफ़ी में जाइज़ नहीं है और इसे दलाइल से साबित किया गया है।

(44) ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला औलिया की एक खास हालत के बयान में है जिसे "सुकर" और "शत्हिय्यात" वग़ैरह से ताबीर किया जाता है। इस ताल्लुक़ से अहले सुन्नत के मुअतदिल मौक़िफ़ को दलाइल के साथ बयान किया गया है। ये रिसाला उनके लिये दावते फिक्र है जो इफ़रातो तफ़रीत के शिकार हैं।

(31) हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी
ये रिसाला औरतों के मख़सूस मसाइल पर मुश्तमिल है।
(32) रमज़ान और क़ज़ा -ए- उमरी की नमाज़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल
ये मुख़्तसर सी तहक़ीक़ इस बयान में है कि क्या रमज़ान के आखिरी जुम्आ में किसी नमाज़ के पढ़ने से सारी क़ज़ा नमाज़ें माफ़ हो जाती हैं? इस तरह की रिवायतों की क्या अस्ल है?
(33) 40 अहादीसे शफ़ाअत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
इस रिसाले में शफ़ाअते मुस्तफ़ा के हवाले से 40 हदीसें लिखी गई हैं।
(34) बीमारी का उड़ कर लगना - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
ये किताब इस बात की तहक़ीक़ पर है कि बीमारी उड़ कर लग सकती है या नहीं यानी किसी एक को हुआ मर्ज़ किसी दूसरे में मुंतक़िल हो सकता है या नहीं।
(35) ज़न और यक़ीन - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा बरेलवी
ये रिसाला ज़न और यक़ीन के अहकाम पर लिखा गया है, इल्मे फ़िक़्ह पढ़ने वालों के लिये इस में कई इल्मी निकात हैं जिनसे वस्वसों को दूर किया जा सकता है।
(36) ज़मीन साकिन है - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
इस किताब में साबित किया गया है कि ज़मीन हरकत नहीं करती बल्कि ये साकिन (ठहरी हुई) है।
(37) अबू तालिब पर तहक़ीक़ - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
इस किताब में अबू तालिब के ईमान के मसअले पर जम्हूर अहले सुन्नत का मौक़िफ़ पेश किया गया है, यही मौक़िफ़ तहक़ीक़ से साबित है कि अबू तालिब ने इस्लाम कुबूल नहीं किया था।
(38) क़ुरबानी का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी
इस रिसाले में क़ुरबानी के फ़ज़ाइल और फ़िक़्ही मसाइल हैं जो कि बहारे शरीअत से माखूज़ हैं।
(39) इस्लामी तालीम (पार्ट 2) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
ये इस्लामी तालीम का दूसरा हिस्सा है ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।
(40) सफ़ीना -ए- बख़्शिश - ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान
ये किताब हुज़ूर ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान बरेलवी के कलाम का मज्मूआ है।
(41) मैं नहीं जानता - मौलाना हसन नूरी गोंडवी
ये मुख़्तसर सा रिसाला एक अहम पैग़ाम पर मुश्तमिल है कि उलमा व अवाम सबको चाहिये कि ला इल्मी का एतिराफ़ करने की आदत डालें और जहाँ इल्म न हो वहाँ तकल्लुफ़ कर के जवाब ना देते हुए कह दिया जाए कि मैं नहीं जानता।
(42) जंगे बद्र के हालात इख़्तिसार के साथ - मौलाना अबू मसरूर असलम रज़ा मिस्बाही कटिहारी
इस रिसाले में मुख़्तसर अल्फाज़ में जंगे बद्र के हालात को बयान किया गया है।
(43) तह़क़ीक़े इमामत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी
ये किताब इमामते कुब्रा के बारे में है और इस बात की तह़क़ीक़ बयान की गई है कि हज़रते अबू बक्र

सिद्दीक़ और हज़रते अ़ली की इमामत के बारे में अहले सुन्नत का क्या नज़रिया है।

(44) सफ़रनामा बिलादे ख़मसा - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये एक सफ़रनामा है, हिंदुस्तान के 5 बिलाद के सफ़र के अहवाल पर मुश्तमिल है, इस के मुताले से जहाँ आप 5 बिलाद के मुताल्लिक़ मालूमात हासिल करेंगे वहीं कई इल्मी निकात भी आप मुलाहिज़ा फ़रमायेंगे।

(45) मंसूर हल्लाज - अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये मुख़्तसर सा रिसाला हज़रते मंसूर हल्लाज रहीमहुल्लाहु त'आला के हालात पर है जिस में उलमा -ए-अहले सुन्नत की तहक़ीक़ को बयान किया गया है और हज़रते मंसूर हल्लाज के बारे में रखे जाने वाले नज़रियों को पेश कर के जाइज़ा लिया गया है।

TO DONATE :

Account Details :

Airtel Payments Bank

Account No.: 9102520764

(Sabir Ansari)

IFSC Code : AIRP0000001

SCAN HERE

PhonePe G Pay Paytm **9102520764**

OUR DEPARTMENTS:

E NIKAH MATRIMONIAL SERVICE

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

ROMAN BOOKS

PURE SUNNI GRAPHICS
GRAPHIC DESIGNING DEPARTMENT

TO CONNECT AHLE SUNNAT

/abdemustafaofficial

for more details WhatsApp on **+919102520764**

ABOUT US

Abde Mustafa Official is a team from **Ahle Sunnat Wa Jama'at** working since 2014 on the Aim to propagate **Quraan and Sunnah** through electronic and print media.

We are :

blogging, publishing books and pamphlets in multiple languages on various topics, running a special matrimonial service for Sunni Muslims.

www.abdemustafa.in

about thousands of articles & 200+ pamphlets and books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

if you are searching a Sunni life partner then **E Nikah** is a right platform for you.

Visit **www.enikah.in**

Or join our Telegram Channel

t.me/enikah (search "E Nikah Service" in Telegram)

Follow us on Social Media Networks :

/abdemustafaofficial

For more details WhatsApp **+91 91025 20764**

OUR BRANDS :

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

Enikah E NIKAH MATRIMONY SERVICE

POWERED BY: